भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में अन्तर

दर्शन के सम्बन्ध में पाश्चात्य तथा भारतीय विचारकों के दृष्टिकोण अलग-अलग हैं–

- भारतीय दर्शन की पहली सामान्य आधारभूत धारणा नैतिक और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने की शिक्षा है। पश्चिम में दर्शन केवल ज्ञान की मीमांसा और आकांक्षा भर रह जाता है–ज्ञान के लिए ज्ञान पर अधिक जोर दिया जाता है।
- दर्शन बुद्धि की उपज है। ज्ञान की पिपासा शांत करने के लिए पश्चिम में दर्शन का जन्म हुआ। परन्तु भारत में दर्शन का प्रादुर्भाव आध्यात्मिक असंतोष प्राप्त करना है। दुखों के कारण मन में सर्वदा अशांति बनी रहती है। मानसिक अशांति से इस विचार की उत्पत्ति होती है– मनुष्य के दुखों का क्या कारण है, और इसे जानने के लिए भारत के सभी दार्शनिक प्रयत्न करते हैं।
- कुछ पाश्चात्य दार्शनिक भारतीय दर्शन को कोरा सैद्धांतिक (Theoretical) बतलाते हैं। परन्तु यह उनकी भूल है। भारतीय दर्शन व्यावहारिक (Practical) भी है। इसे व्यवहार में लाकर जीवन के कठिन प्रश्नों को सुलझा सकते हैं।
- पाश्चात्य तत्वविज्ञान एकांगी है, क्योंकि यह जाग्रत अवस्था पर ही अधिक जोर देता है। भारतीय दर्शन चेतना की तीनों अवस्थाओं पर एक सा प्रकाश डालता है। जाग्रत चेतना यथार्थ, द्वैत और अनेक को स्पष्ट करती है। स्वप्नावस्था सिद्धांत की ओर जाती है और 'Dreamless sleep' रहस्यवादी सिद्धान्त की ओर संकेत करता है। इस प्रकार भारतीय दर्शन सर्वांगी है।
- भारत में ईश्वर के प्रति मनुष्य में श्रद्धा और भक्ति रही है। पाश्चात्य दर्शन में यथार्थवादिता के प्रभाव के कारण ईश्वर और मनुष्य में विरोध है।

भारतीय दर्शन आशावादी है या निराशावादी– स्पष्ट करें।

भारतीय दर्शन की सभी शाखाएँ जीवन को पूर्णतया दुखद मानती हैं। उनके अनुसार यह जीवन ''अनित्य, असुख, लोकमाय'' है। गीता की दिव्यवाणी भी इस बात को स्पष्ट करती है कि विद्वान पुरुष जीवन को जन्म-मरण, दुख और संताप से सराबोर समझते है। बुद्ध का प्रथम आर्य-सत्य (Noble truth) भी संसार को दुखमय मानता है। उपनिषद के अनुसार भी संसार अपूर्ण है, अर्थात् क्लेशमय है। चार्वाक को छोड़ सभी दार्शनिक इस बात से सहमत हैं।

भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक असंतोष ही वह मूलतत्व है, जिससे दर्शन की उत्पत्ति होती है। अत: भारत में दर्शन का प्रारंभ नैराश्यवाद से होता है, लेकिन भारतीय दर्शन को पूर्णतया नैराश्यवादी कहना अतिशयोक्ति होगी।

लार्ड रोनाल्ड शे के शब्दों में- ''यदि निराशावाद न हो तो आशावाद का जन्म नहीं हो सकता। अत: निराशावाद जीवन की मृगमरीचिका से सावधान करके हममें स्वस्थ आशावाद का प्रसार करता है। संसार यदि दुखमय न होता तो उसके दार्शनिक विश्लेषण की आवश्यकता ही क्यों पड़ती? अत: भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना युक्तिसंगत नहीं है।'' वह निराशावाद का विश्लेषण करते हुए भी आशावादी दर्शन है। ''सत्यं, शिवं, सुन्दरम्'' की परिकल्पना इसी तथ्य की तरफ इंगित करती है।

भारतीय दर्शन जीवन में अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से जीवन की ओर, दुख से सुख की ओर जाने की कल्पना करते हैं, अत: इसे निराशावादी कदापि नहीं कहा जा सकता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com